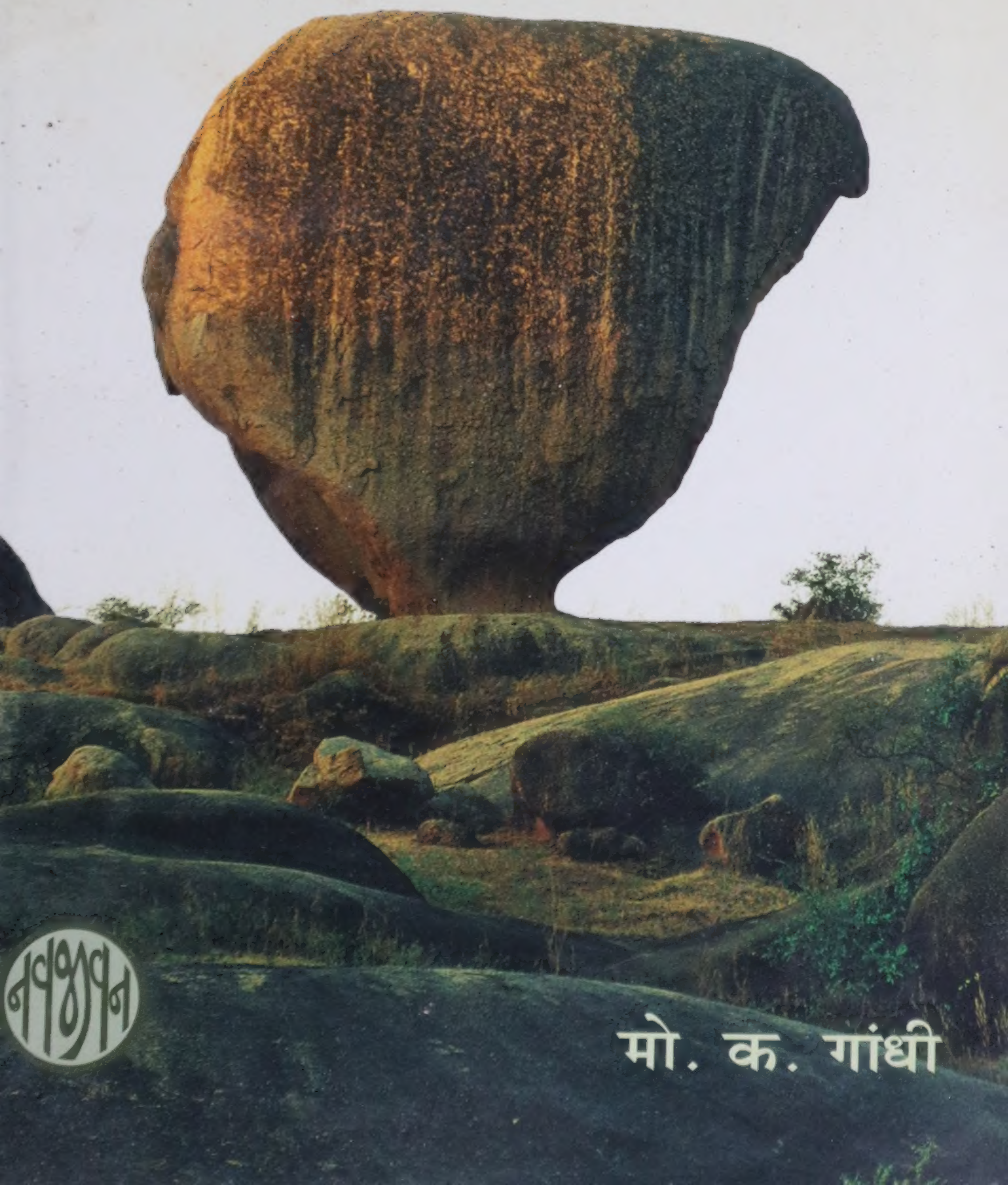
चारित्र्य और राष्ट्रनिर्माण



मो. क. गांधी

चारित्र्य और राष्ट्रनिर्माण

गांधीजी

संक्षिप्त और संपादन

वालजी गोविन्दजी देसाई

NAVAJIVAN

पंद्रह रुपये

पहली आवृत्ति, प्रति १०,०००, २००४
पाँचवा पुनर्मुद्रण, प्रति १,०००, मार्च २०१७
कुल प्रतियाँ: २२,०००

ISBN: 978-81-7229-343-7

मुद्रक व प्रकाशक
विवेक जितेन्द्र देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-३८० ०१४
फोन: ०७९-२७५४०६३५, २७५४२६३४
E-mail: sales@navajivantrust.org
Website: www.navajivantrust.org

प्रस्तावना

मंगलप्रभात, सत्याग्रह आश्रम का इतिहास और *रचनात्मक कार्यक्रम,* उसका रहस्य और स्थान के इस सारांश को मैंने देख लिया है। इसकी ख़ूबी यह है कि यह सारांश है फिर भी मुझे उसमें कोई अधूरापन नहीं लगा है।

पूना, जुलाई २९, १९४६ **मो. क. गांधी**

पाठकों से

मेरे लेखों का मेहनत से अध्ययन करनेवालों और उनमें दिलचस्पी लेनेवालों से मैं यह कहना चाहता हूँ कि मुझे हमेशा एक ही रूप में दिखाई देने की कोई परवाह नहीं है। सत्य की अपनी खोज में मैंने बहुत-से विचारों को छोड़ा है और अनेक नई बातें मैं सीखा भी हूँ। उमर में भले मैं बूढ़ा हो गया हूँ, लेकिन मुझे एसा नहीं लगता कि मेरा आन्तरिक विकास होना बन्द हो गया है या देह छूटने के बाद मेरा विकास बन्द हो जाएगा। मुझे एक ही बात की चिंता है, और वह है प्रतिक्षण सत्य-नारायण की वाणी का अनुसरण करने की मेरी तत्परता। इसलिए जब किसी पाठक को मेरे दो लेखों में विरोध जैसा लगे, तब अगर उसे मेरी समझदारी में विश्वास हो तो वह एक ही विषय पर लिखे दो लेखों में से मेरे बाद के लेख को प्रमाणभूत मानें।

हरिजनबन्धु, ३०-४-'३३ **गांधीजी**

अनुक्रमणिका

आश्रम के व्रतों कीं रूपरेखा

रचनात्मक कार्यक्रम की रूपरेखा

इस पुस्तिका का मैटर *मंगल-प्रभात, सत्याग्रह आश्रम का इतिहास* **और** *रचनात्मक कार्यक्रम***में से संपादित किया गया है। पुस्तिका में दिये गये संदर्भ के लिए उपयोग में ली गई पुस्तिकाओं के संक्षिप्तिकरण की जानकारी नीचे दी है:**
१. *मंगल-प्रभात*=**मं.प्र.**, २. *सत्याग्रह आश्रम का इतिहास*=**स.आ.इ.**,
३. *रचनात्मक कार्यक्रम-उसका रहस्य और स्थान*=**र.का.**।
तीनों का प्रकाशक : नवजीवन प्रकाशन मंदिर, पो. ओ. नवजीवन, अहमदाबाद-१४

आश्रम के व्रतों कीं रूपरेखा

१. सत्य

सत्य ही परमेश्वर है। (मं.प्र., पृ.७)

इस सत्य की भक्ति के ख़ातिर ही हमारी हस्ती हो। सत्य के बगैर किसी भी नियम का शुद्ध पालन नामुमकिन है। (मं.प्र., पृ.८)

विचार में, बोलने में और बर्ताव में सच्चाई ही सत्य है। (मं.प्र., पृ.८) लेकिन सत्य को, जो पारसमणि जैसा है, जो कामधेनु जैसा है, कैसे पाया जाए? उसका जवाब भगवान ने दिया है: अभ्यास से और बैराग से। सत्य की ही चटपटी अभ्यास है; उसे छोड़कर दूसरी सब चीजों के बारे में बिलकुल उदासीनता-लापरवाही बैराग है। (मं.प्र., पृ.९)

फिर भी हम देखते रहेंगे कि जो एक आदमी के लिए सत्य है, वह दूसरे के लिए असत्य है। इससे घबराने का कोई कारण नहीं है। ...क्योंकि सत्य की खोज के पीछे तपस्या होने से खुद को दुःख सहना होता है, उसके पीछे मर मिटना होता है।... एसी निःस्वार्थ खोज करते हुए आज तक कोई गलत रास्ते आखिरी हद तक नहीं गया। गलत रास्ते गया कि उसे ठेस लगती ही है; और फिर से वह सीधी राह पर आ जाता है।... उसमें हार जैसी कोई बात ही नहीं है। वह तो मरकर जीने का मंत्र है। (मं.प्र., पृ.९)

वह सत्यरूप परमेश्वर मेरे लिए रत्न-चिंतामणि (मनचाहा देनेवाला तिलस्माती रत्न) साबित हुआ है; हम सबके लिए वह वैसा ही साबित हो। (मं.प्र., २००३, पृ.१०)

अर्थ तो हम भूल ही जाएँ। (मं.प्र., २००३, पृ.२

४. अस्वाद

मेरा अनुभव है कि अगर मनुष्य इस व्रत में पार उतर सके, तो ब्रह्मच
यानी इन्द्रियों का संयम बिलकुल सरल हो जाए।

(मं.प्र., २००३, पृ.२

भोजन सिर्फ शरीर को ज़िन्दा रखने के लिए और सेवा के लिए तैय
रखने के लिए करना चाहिए। भोग विलास के लिए नहीं। इसका मतल
यह है कि उसे दवाई समझकर, संयम के साथ खाना चाहिए। इस व्र
के पालनेवाले को विकार पैदा करनेवाले मसाले वगैरा पदार्थों का त्य
करना चाहिए। मांस, तंबाकु, शराब, भांग इत्यादि चीजों के उपयोग
आश्रम में मनाही है। इस व्रत में स्वाद के लिए दावत करने या भोज
का आग्रह करने की मनाही है। (स.आ.इ., १९४९, पृ.७

सबकी रसोई बनानेवाले हमारा बोझ हलका करते हैं। वे हम
व्रत के रखवाले बनते हैं। वे स्वाद कराने की दृष्टि से कुछ भी न
बनायेंगे, सिर्फ समाज के शरीर के पोषण के लिये ही खाना पकायें

(मं.प्र., २००३, पृ.२

आदर्श दशा में आग की जरूरत कम से कम या बिलकुल
नहीं है। सूरज के रूप में महा अग्नि जो चीजें पकाती हैं, उन्हीं में
अपने खाने लायक चीजें हमें खोज निकालना चाहिए और इस त
सोचने पर मनुष्य-प्राणी सिर्फ फल खानेवाला है एसा साबित हो
है। (मं.प्र., २००३, पृ.२

५. अस्तेय

बगैर इज़ाजत किसीका कुछ लेना यह तो चोरी है ही। लेकिन जि
अपना माना है उसकी भी चोरी इन्सान करता है, जैसे कोई बाप अ

बच्चों के न जानते हुए, उनको न जताने के इरादे से, चोरी-चुपके कोई चीज खा लेता है। (मं.प्र., २००३, पृ.२६)

अपना कम से कम जरूरत से अधिक मनुष्य जो कुछ भी लेता है वह चोरी का ही लेता है। (स.आ.इ., १९५९, पृ.७५)

अस्तेय का व्रत पालनेवाला एक के बाद एक अपनी हाजतें कम करता जाएगा। इस जगत में बहुत-सी कंगाली अस्तेय के भंग से पैदा हुई है। (मं.प्र., २००३, पृ.२७)

मन से हम किसी की चीज पाने की इच्छा करें या उस पर बुरी नज़र डालें यह चोरी है। (पूर्वोक्त, पृ.२८)

६. अपरिग्रह

जैसे अनावश्यक चीज ली नहीं जा सकती, वैसे उसका संग्रह भी नहीं किया जा सकता। इसका मतलब यह है कि जिस अन्न या साज-सामान की जरूरत न हो, उसका संग्रह करना इस व्रत का भंग करना है। कुर्सी के बिना जिसका काम चल सकता है, उसे कुर्सी रखनी ही न चाहिए। अपरिग्रही को अपना जीवन हमेशा सादा बनाते रहना चाहिए। (स.आ.इ., १९५९, पृ.७५-७६)

परमात्मा परिग्रह नहीं करता। अपने लिए जरूरी चीज वह रोज की रोज पैदा करता है। (मं.प्र., २००३, पृ.२९)

सब लोग अगर अपनी जरूरत की चीजों का ही संग्रह करें, तो किसी को तंगी महसूस न हो और सबको संतोष हो। (मं.प्र., २००३, पृ.३०)

सही सुधार, सच्ची सभ्यता का लक्षण परिग्रह बढ़ाना नहीं है, बल्कि सोच-समझकर और अपनी इच्छा से उसे कम करना है। ज्यों-ज्यों हम परिग्रह घटाते जाते हैं, त्यों-त्यों सच्चा सुख और सच्चा संतोष बढ़ता जाता है, सेवा की शक्ति बढ़ती जाती है। (मं.प्र., २००३, पृ.३१)

जो विचार हमें ईश्वर से विमुख करते हैं, फेर लेते हैं या ईश्व
की ओर नहीं ले जाते, वे सब परिग्रह में गिने जाएँगे और इसलि
छोड़ने लायक हैं। (मं.प्र., २००३, पृ.३

७. अभय

जो सत्यपरायण रहना चाहते हैं, वे न जात-पाँत से डरें, न सरकार
डरें, न चोर से डरें, न गरीबी से डरें और न मौत से डरें।

(स.आ.इ., १९५९, पृ.७

इसकी (अभय की) गिनती गीताजी के सोलहवें अध्याय में दै
संपत् का जिक्र करते हुए भगवान ने प्रथम की है। ...बिना अभय
सत्य की खोज कैसे हो? बिना अभय के अहिंसा का पालन कैसे हो
'हरिनो मारग छे शूरानो, नहीं कायरनुं काम जोने' (हरि का मार्ग श
का मार्ग है, उसमें कायर का काम नहीं) सत्य ही हरि, वही राम, व
नारायण, वही वासुदेव है। कायर यानी डरा हुआ, बुजदिल; शूर या
भय से मुक्त, तलवार वगेरे से लैस नहीं। तलवार बहादुर की निशा
नहीं है, वह डरपोक की निशानी है।

(मं.प्र., २००३, पृ.३

सत्य की खोज करनेवाले को इन सब भय को छोड़े सिवा च
नहीं। हरिश्चंद्र की तरह बरबाद होने की उसकी तैयारी होनी चाहि

(पूर्वोक्त, पृ.३४-३

हमें बाहरी भय से मुक्ति पानी है। अन्दर जो दुश्मन हैं उनसे
डर कर ही चलना है। काम, क्रोध वगैरा का भय सच्चा भय है। उ
जीत लें तो बाहरी भयों की परेशानी अपने आप मिट जाएगी। ...
में से, कुटुम्ब में से, शरीर में से 'मेरा'पन हम निकाल दें, तो
कहाँ रह जाता है? तेन त्यक्तेन भुंजीथाः (उसे तजकर भोगो)
रामबाण वचन है। (पूर्वोक्त, पृ.३

८. अस्पृश्यता-निवारण

छूतछात में धर्म नहीं, बल्कि अधर्म है।

(स.आ.इ., १९५९, पृ.७७)

अगर आत्मा एक ही है, ईश्वर एक ही है, तो अछूत कोई नहीं।

(मं.प्र., २००३, पृ.३७)

इसलिए जो (हिन्दू) उसे पाप मानता है, वह उसका प्रायश्चित्त करे, और कुछ नहीं तो प्रायश्चित्त के तौर पर ही, समझदार हिन्दू अपना धर्म समझकर, हर एक अछूत माने जानेवाले भाई या बहन को अपनावे; प्रेम से और सेवाभाव से उसे छुए, छूकर अपने को पावन हुआ माने, 'अछूतों' के दुःख दूर करे। वे बरसों से कुचले गये हैं, इसलिए उनमें अज्ञान वगैरा जो दोष आ गये हैं, उन्हें धीरज से दूर करने में उनकी मदद करे।

(पूर्वोक्त, पृ.३८)

कुछ लोग तो छुआछूत को पालते-पालते इस पृथ्वी पर भाररूप हो गये हैं। (पूर्वोक्त, २००३, पृ.३९)

अछूतपने को निवारना जो सच्चे रूप में चाहता है वह आदमी सिर्फ अछूतों को अपनाकर संतोष नहीं मानेगा; जब तक वह तमाम जीवों को अपने में नहीं देखता और अपने को तमाम जीवों पर निछावर नहीं कर देगा, तब तक वह शान्त होगा ही नहीं। अछूतपने की नाबूदी करना यानी तमाम जगत के साथ दोस्ती रखना, उसका सेवक बनना।

(मं.प्र., २००३, पृ.३९)

तमाम जीवों के साथ का भेद मिटाना, अछूतपना मिटाना है।

(पूर्वोक्त, पृ.३९)

जातपाँत से हिन्दू धर्म को नुकसान हुआ है। उसमें रही छुआछूत और ऊँचनीच की भावना अहिंसाधर्म को नुकसान पहुँचानेवाली है।

(स.आ.इ., १९५९, पृ.७७)

वर्णव्यवस्था सिर्फ धंधे के संबंध में है। इसलिए जो वर्ण-नीति को पालता है, उसे अपने मातापिता के धंधे से रोजी पैदा करके बाकी का समय ज्ञान प्राप्त करने और उसे बढ़ाने में खर्च करना चाहिए।

(स.आ.इ., १९५९, पृ.७७)

९. जातमेहनत

व्यक्ति जब अपनी जीविका अपनी मेहनत से चलाये, तब ही वह समाज-द्रोह और ख़ुद के द्रोह से बच सकता है। जिसका शरीर काम कर सकता है और जो समझदार हो गया है, उस स्त्री-पुरूष को अपना हररोज का निबटाने लायक काम ख़ुद निबट लेना चाहिए। और बिना कारण दूसरों की सेवा न लेनी चाहिए। लेकिन बच्चों की, अपंगों की और बूढ़े स्त्री-पुरूषों की सेवा का मौका आए, तब उनकी सेवा करना सामाजिक जिम्मेदारी समझनेवाले हर मनुष्य का धर्म है।

(स.आ.इ., १९५९, पृ.७६)

जो मजदूरी नहीं करता उसे खाने का क्या हक है?

(मं.प्र., २००३, पृ.४

हरएक को ख़ुद का भंगी तो बन ही जाना चाहिए। ...जो आद टट्टी फिरता है वही अपनी टट्टी को ज़मीन में गाड़ दे, यह उत्तम रिवा है। अगर यह नहीं ही हो सके, तो प्रत्येक कुटुम्ब अपना यह फ़र्ज़ अ करे। जिस समाज में भंगी का अलग पेशा माना गया है, वहाँ कोई ब दोष पैठ गया है, एसा मुझे तो बरसों से लगता है। ...हम सब भंगी यह भावना हमारे मन में बचपन से ही जम जानी चाहिए; और उस सबसे आसान तरीका यह है कि जो लोग समझ गये हैं, वे जातमेह का आरंभ अपने पाख़ाने सफ़ाई से करें। (मं.प्र., २००३, पृ.४२-

अगर कुदरत के कानून का भंग न किया जाए, तो बूढ़े अपंग बनेंगे; और उन्हें बीमारी तो होगी ही क्यों? (मं.प्र., पृ

१०. सर्वधर्म समभाव-१

संसार में जितने भी प्रचलित प्रख्यात धर्म हैं, वे सब सत्य को प्रगट करते हैं। लेकिन वे सब अपूर्ण मनुष्य द्वारा व्यक्त हुए हैं। इसलिए उन सबमें असत्य का भी मिश्रण हो गया है। इसका मतलब यह कि हममें जितना अपने धर्म के लिए मान हो, उतना ही मान दूसरों के धर्मों के लिए भी होना चाहिए। जहाँ एसी सहिष्णुता हो वहाँ न तो एक-दूसरे के धर्म का विरोध पैदा होता है, न दूसरे धर्मवाले को अपने धर्म में लाने की कोशिश की जाती है। परन्तु सब धर्मों के दोष दूर हों एसी प्रार्थना करना तथा एसी भावना का पोषण करना उचित माना जाता है।

(*स.आ.इ.*, १९५९, पृ.७७)

अगर हम अपूर्ण हैं तो हमारी कल्पना का धर्म भी अपूर्ण है। ...और अगर आदमी के माने हुए सब धर्मों को हम अपूर्ण मानें, तो फिर किसी को ऊँचा या नीचा मानने की बात ही नहीं रहती। सब धर्म सच्चे हैं, लेकिन सब अपूर्ण हैं, इसलिए उनमें दोष हो सकते हैं। समभाव होने पर भी हम उनमें (सब धर्मों में) दोष देख सकते हैं। अपने धर्म में भी हम दोष देखें। इन दोषों के कारण उसे (अपने धर्म को) हम छोड़ न दें, लेकिन उसके दोषों को मिटाएँ। अगर इस तरह हम समभाव रखें, तो दूसरे धर्मों में से जो कुछ लेने लायक हो, उसे अपने धर्म में जगह देने में हमें हिचकिचाहट नहीं होगी; इतना ही नहीं बल्कि एसा करना हमारा फ़र्ज हो जाएगा।

(*मं.प्र.*, २००३, पृ.४४-४५)

सर्वधर्म समभाव-२

यहाँ धर्म-अधर्म का भेद नहीं मिटता। यहाँ तो जिन धर्मों पर मुहर लगी हुई हम जानते हैं उनकी बात है। इन सब धर्मों में मूल सिद्धांत-

बुनियादी उसूल तो एक ही है। (मं.प्र., २००३, पृ.४६

तब सवाल यह उठता है कि बहुत से धर्म किस लिए? धर्म बहुत से हैं यह हम जानते हैं। आत्मा एक है, लेकिन मनुष्य देह अनगिनत हैं। देहों का यह अनगिनतपन टाले नहीं टलता। ...धर्म का मूल एक है, जैसे पेड़ का हो; लेकिन उसके पत्ते अनगिनत हैं।

(पूर्वोक्त, पृ.४६)

दूसरों की गलती के खातिर भी हमें उन्हें दु:ख नहीं देना है, ख़ुद ही भुगतना है, यह सुनहला नियम जो पालता है, वह सब संकटों से उभर जाता है। (पूर्वोक्त, पृ.४९

११. स्वदेशी-व्रत

स्वदेशी-व्रत इस युग का एक महाव्रत है।

(मं.प्र., २००३, पृ.५४

अपने पास के लोगों की सेवा में लगे रहना, ओतप्रोत होना य स्वदेशी धर्म है। ...एसी सेवा करने में दूर के लोग रह जाते हैं, उनको नुकसान पहुँचता है, एसा आभास होने का संभव है। ...इस उलटा दूर के लोगों की सेवा करने का मोह रखने से वह तो हो नहीं और पड़ोसी की सेवा भी रह जाती है। (पूर्वोक्त, पृ.५

जहाँ तक हमसे बन सके हमें अपने पड़ोस की दुकान से व्यव करना चाहिए। जो चीजें अपने देश में बनती हों या आसानी से सकती हों, वह हमें परदेश से नहीं मँगानी चाहिए।

(स.आ.इ., १९५९, पृ.७

स्वदेशी में स्वार्थ का स्थान नहीं है। व्यक्ति को कुटुम्ब के, कु को शहर के, शहर को देश के तथा देश को जगत के कल्याण लिए क़ुरबान हो जाना चाहिए। (पूर्वोक्त, पृ.

स्वदेशी को न समझने से ही गड़बड़ी पैदा होती है। कुटुम्ब

मोह रखकर मैं उसे झूठा लाड़प्यार करूँ उसके ख़ातिर धन चुराऊँ, दूसरी चालें चलूँ यह स्वदेशी नहीं है। (*मं.प्र.*, २००३, पृ.५५)

मान लीजिए कि मेरे गाँव में महामारी फैली है। उस बीमारी में फँसे हुए लोगों की सेवा में, मैं अपने को, अपनी पत्नी को, पुत्रों को और पुत्रियों को अगर लगाऊँ और उस बीमारी में फँसकर सब मौत की शरण में चले जाएँ, तो मैंने कुटुंब का नाश नहीं किया, मैंने उसकी सेवा की है। (पूर्वोक्त, पृ.५६)

मैंने अपने आप से पूछा कि, इस देश में इस युग में सबको पालने की बहुत जरूरत हो, सब समझ सकें जिसके सहज पालन से भी हिंदुस्तान के करोड़ों अधभूखे भाई बहनों की रक्षा हो सकती है एसा कौन-सा स्वदेशी धर्म है? जवाब मिला चरखा या खादी।

(पूर्वोक्त, पृ.५६-५७)

इस धर्म के पालन से परदेशी या हिन्दुस्तान के मिलवालों का नुकसान होता है, एसा कोई न माने। अगर चोर को चुराई हुई चीज़ लौटानी पड़ी या चोरी करने से रोका गया, तो उसमें उसे नुकसान नहीं है, लाभ है। ...अगर दुनिया में से शराबख़ोर और अफीम के व्यसनी शराब पीना या अफीम ख़ाना छोड़ दें, तो उससे कलाल को या अफीम के दुकानदार को नुकसान नहीं लाभ है।

(*मं.प्र.*, २००३, पृ.५७)

जो लोग चरखे से जैसे-तैसे सूत कातकर और खादी पहनकर यह मान लेते हैं कि स्वदेशी-धर्म का पूरा पालन हो गया, वे बड़े मोह में डूबे हुए हैं। ...एसे खादीधारी देखे गये हैं, जो और सब चीजें परदेशी खरीदते हैं। वे स्वदेशी धर्म का पालन नहीं करते। स्वदेशी व्रत का पालन करनेवाला हमेशा जहाँ-जहाँ पड़ोसियों की सेवा की जा सके, यानी जहाँ उनके हाथों का तैयार किया हुआ जरूरत का माल हो वहाँ दूसरा माल छोड़कर उसे लेगा। फिर भले ही स्वदेशी चीज पहले पहल महँगी और घटिया दरजे की हो। व्रतधारी उसे सुधारने की कोशिश

करेगा; स्वदेशी चीज ख़राब है इसलिए परदेशी इस्तेमाल करने नहीं लग जाएगा। (मं.प्र., २००३, पृ.५७-५८)

परिशिष्ट १

नम्रता

नम्रता का माने है बिलकुल क्षय यानी मिट जाना। ...लेकिन अगर उस चक्कर में से हम निकल जायें यानी 'कुछ' नहीं हैं- बन जाएँ, तो सबकुछ हो जाएँ। 'कुछ' होना यानी ईश्वर से- परमात्मा से- सत्य से अलग होना। 'कुछ' का मिट जाना यानी परमात्मा में मिल जाना। समुद्र में रही हुई बूंद समुद्र की बड़ाई को भोगती है, लेकिन इसका उसे ज्ञान नहीं होता। ज्यों ही वह समुद्र से अलग हुई और अपनेपन का दावा करने लगी उसी दम वह सुख गई।

(मं.प्र., २००३, पृ.५१)

परिशिष्ट २

व्रत की जरूरत

ईश्वर ख़ुद निश्चय की, व्रत की संपूर्ण मूर्ति है। ...सूरज बड़ा व्रतधारी है। ...तमाम व्यापार का आधार एक टेक पर रहता है। तब फिर जहाँ अपना जीवन गढ़ने का सवाल हो, ईश्वर दर्शन करने का प्रश्न हो, वहाँ व्रत के बगैर कैसे चल सकता है?

(मं.प्र., २००३, पृ.६१)

'जहाँ तक हो सकेगा' - यह वचन शुभ निश्चयों में जहर जैसा है।

(पूर्वोक्त, पृ.६१)

जो आचरण पापरूप हो, उसके निश्चय को व्रत नहीं कहा जाएगा।

(पूर्वोक्त, पृ.५१)

रचनात्मक कार्यक्रम की रूपरेखा

१

अयं हिन्दुः अयं मुस्लिम् गणना लघुचेतसाम्।
अुदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।
हिन्दोः च मुस्लिमश्चेति केयं स्थानक (स्टेशन) घोषणा।।

२

बान्धवाः मानवाः सर्वे अस्पृश्यो नास्ति कश्चन।।

४

हस्तेन कर्तितं यत् स्यात् हस्तप्रोतं तथैव च।
तद् वस्त्रं परिधातव्यं लोके खादीति कीर्तितम्।।१।।

खादीवस्त्रे हि निहितं भगिनीशीलरक्षणम्।
खादीवस्त्रं अहिंसाया आधारो मूर्तिरिव च।।२।।

खादीमृत्यौ मृता ग्रामा ग्राममृत्यौ मृता दया।
खाद्या धर्मे तथैवार्थे महासिद्धिर् भविष्यति।।३।।

ग्रामनिर्मितवस्तूनि प्रयोक्तव्यानि नागरैः।
भारतीया भविष्यन्ति ह्येतेन स्ववशाः समाः ।।४।।

दे. वा.

[गांधीजीप्रणीतग्रन्थानुसारेणैते श्लोका रचिताः।]

३

अेकतः सर्वपापानि मद्यपानं तथैकतः।। चाणक्य।।

प्रस्तावना

रचनात्मक कार्यक्रम ही पूर्ण स्वराज्य या मुकम्मिल आज़ादी को हासिल करने का सच्चा और अहिंसक रास्ता है। उसकी पूरी-पूरी सिद्धि ही संपूर्ण स्वतंत्रता है।

(र.का., २००४, जान्यु., प्रस्तावना पृ.५)

सविनय कानूनभंग या सत्याग्रह सशस्त्र विद्रोह का स्थान भली भाँति ले सकता है। सत्याग्रह के लिए भी तालीम की उतनी ही जरूरत है, जितनी सशस्त्र विद्रोह के लिए। सत्याग्रह में तालीम का अर्थ है रचनात्मक कार्यक्रम या तामीरी काम।

(पूर्वोक्त, पृ.६)

हिंसक लड़ाई में सत्य का सबसे पहले और सबसे बड़ा बलिदान होता है; किन्तु अहिंसा की लड़ाई में वह सदा विजयी रहता है।

(पूर्वोक्त, पृ.७)

१. क़ौमी एकता

मगर एकता या इत्तफाक के सच्चे मानी तो हैं वह दिली दोस्ती, जो किसी के तोड़े न टूटे। (र.का., २००४, पृ.१२)

सबसे पहली जरूरत इस बात की है कि कांग्रेसजन, फिर वे किसी भी धर्म के माननेवाले हों, अपने को हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी वगैरा सभी कौमों के नुमाइन्दा समझें। हिन्दुस्तान के करोड़ों बाशिन्दों में से हर एक के साथ वे अपनेपने का-आत्मीयता का-अनुभव करें। इस तरह की आत्मीयता को सिद्ध करने के लिए हर एक कांग्रेसी को चाहिए कि वह अपने धर्म से भिन्न धर्म का पालन करनेवाले लोगों के साथ निजी दोस्ती कायम करे और अपने धर्म के लिए उसके मन में जैसा प्रेम हो, ठीक वैसा ही प्रेम वह दूसरे धर्म से भी करे।

जब हमारी हालत एसी खुशगवार हो जाएगी, तो आज रेलवे स्टेशनों पर 'हिन्दू चाय' और 'मुस्लिम चाय', 'हिन्दू पानी' और 'मुस्लिम पानी' की जो शरमानेवाली आवाज़ें हमें सुननी पड़ती हैं वे न सुननी पड़ेंगी।

(र.का., २००४, पृ.१२)

हम एक अरसे से इस बात को मानने के आदि बन गये हैं कि आम जनता को सत्ता या हकूमत सिर्फ़ धारासभाओं के जरिए मिलती है। इस ख़याल को मैं अपने लोगों की एक गंभीर भूल मानता हूँ। सच बात यह है कि हकूमत या सत्ता जनता के बीच रहती है।.... जनता से भिन्न या स्वतंत्र पार्लमेन्टों की सत्ता तो ठीक, हस्ती तक नहीं होती। सत्ता का असली भंडार या खजाना तो सत्याग्रह की या सविनय काननूभंग की शक्ति में है। एक समूचा राष्ट्र अपनी धारासभा के कानूनों के अनुसार चलने से, इनकार कर दे और इस सिविल नाफरमानी के नतीजों को बरदाश्त करने के लिए तैयार हो जाए, तो सोचिए कि क्या होगा? एसी जनता सरकार की धारासभा को और उसके शासन-प्रबंध को जहाँ का तहाँ, पूरी तरह, रोक देगी। (पूर्वोक्त १३-१४) लेकिन जब कोई समूचा राष्ट्र सबकुछ सहने को तैयार हो जाता है, तो उसके दृढ़ संकल्प को ड़िगाने में किसी पुलिस की या फौज की कोई जबरदस्ती काम नहीं देती।

२. अस्पृश्यता-निवारण

हर एक हिन्दू को यह समझना चाहिए कि हरिजनों का काम उसका अपना काम है और जिस अकुलानेवाली व भयानक अलहदगी में उन्हें रहना पड़ता है, उसमें उनके साथ शामिल होना चाहिए।

(र.का., २००४, पृ.१५-१६)

३. शराबबन्दी

शराब और अफीम के पंजे में फसे हुए लोगों को इन व्यसनों से छुड़ाने के उपाय डॉक्टर को ढूँढ निकालने होंगे।

स्त्रियों और विद्यार्थियों के लिए सुधार के इस काम को आगे बढ़ाने का, यह एक खास मौका है। प्रेमपूर्वक की गई सेवा के जरिए ये लोग व्यसनियों के दिल पर इतना अधिकार जमा लेंगे कि बुरी आदतों को छोड़ने के लिए इस प्रेमी सेवकों द्वारा की गई प्रार्थना उन्हें सुननी ही पड़ेगी।

राष्ट्रीय कांग्रेस की समितियाँ आनंद विनोद के एसे केन्द्र या विश्रांति-गृह खोलें, जहाँ थके-माँदे मज़दूर अपने अंगों को आराम दे सकें, साफ़ और तंदुरस्ती बढ़ानेवाले पेय या नास्ते की सस्ती चीजें पा सकें और अपनी पसंद व पहुँच के खेल-तमाशों में शरीक हो सकें।

(र.का., २००४, पृ.२३

४. खादी

खादी का मतलब है, देश के सभी लोगों की आर्थिक स्वतंत्रता और समानता का आरंभ।....

हमें इस बात का दृढ़ संकल्प करना चाहिए कि हम अपने जीवन की सभी जरूरतों को हिन्दुस्तान की बनी चीजों से और उनमें भी हमारे गाँव में रहनेवाली आम जनता की मेहनत और अक्कल से बनी चीजों के जरिए पूरा करेंगे। (र.का., २००४, पृ.१८-१

इसलिए अब तक जो सिद्धांत बना है, वह यह है कि हर एक गाँव को अपनी जरूरत की सब चीजें ख़ुद पैदा कर लेनी चाहिये और शहरों की जरूरतें पूरी करने के लिए कुछ अधिक उत्पन्न करनी चाहि

(पूर्वोक्त, पृ.

यहाँ तो मैं इस संबंध में कुछ खास-खास नियम ही देता हूँ:

(१) जिन परिवारों के पास ज़मीन का छोटा-सा भी टुकड़ा हो, उन्हें कम से कम अपनी जरूरत जितनी कपास उगा लेनी चाहिए।.... हमारे किसानों को अभी यह सिखना है कि अपनी जरूरत की चीजों की खेती करना किसान का सबसे पहला फ़र्ज़ है।

(२) अगर कातनेवाले के पास अपनी निजकी कपास न हो तो उसे अपनी जरूरत के लायक कपास ओटने के लिए खरीद लेना चाहिए। ओटने का काम हाथ-चरख़ी की मदद के बिना भी बहुत आसानी से हो सकता है। हर आदमी के लिए एक पटिया और लोहे की एक छोटी सलाख अपनी कपास ओटने के लिए काफी है। जहाँ यह काम न हो सके, वहाँ कातनेवाले को हाथ से ओटी हुई रूई खरीदकर उसे धुनक लेना चाहिए। अपने काम के लायक पिंजाई छोटी धनुष-पींजन पर बिना ज़्यादा मेहनत के अच्छी हो जाती है।... धुनी हुई पूनियाँ बना लेने पर कताई शुरू हो सकती है। कताई के लिए मैं धनुष-तकुए की सिफारिश खास तौर पर करता हूँ। मैं चरखे के बदले धनुष-तकुए के इस्तेमाल पर इसलिए इतना जोर दे रहा हूँ कि उसे बना लेना ज़्यादा-आसान है। वह चरखे के मुकाबले सस्ता पड़ता है, और चरखे की तरह बार-बार उसकी मरम्मत नहीं करनी पड़ती।

(र.का., २००४, पृ.२२, २३, २४)

अब ख़याल कीजिए कि कताई तक के अलग-अलग कामों में हमारा सारा देश एक साथ जुट जाए तो हमारे लोगो में कितनी एकता पैदा हो जाए और उन्हें कितनी तालीम मिले! यह भी सोचिए कि जब अमीर और गरीब सब एक ही तरह का काम करेंगे तो उसमें पैदा होनेवाली प्रीति के बंधनों से बंधकर और आपस के भेदभावों को भूलकर वे किस हद तक एक-दूसरे के बराबर हो जाएँगे?

(पूर्वोक्त, पृ.२५)

५. दूसरे ग्रामोद्योग

खादी के अभाव में उनकी कोई हस्ती नहीं और उनके बिना खादी का गौरव या शोभा नहीं। हाथ से पीसना, हाथ से कूटना और कछोरना साबुन बनाना, काग़ज़ बनाना, चमड़ कमाना, तेल पेरना, दियासलाई बनाना और इस तरह के सामाजिक जीवन के लिए जरूरी और महत्त्व के दूसरे धंधों के बिना गाँवों की आर्थिक रचना संपूर्ण नहीं हो सकती।

(र.का., २००४, पृ.२६)

हर एक आदमी को, हर हिन्दुस्तानी को इसे अपना धर्म समझना चाहिए कि जब-जब और जहाँ-जहाँ मिले, वहाँ वह हमेशा गाँवों की बनी चीजें ही बरते... ... जब हम गाँवों के लिए सहानुभूति से सोचने लगेंगे और गाँवों की बनी चीजें हमें पसंद आने लगेंगी, तब पश्चिम की नकल के रूप में यंत्रों की बनी चीजें हमें नहीं जचेंगी; और हम एसी राष्ट्रीय अभिरूचि का विकास करेंगे, जो ग़रीबी, भुखमरी और आलस्य या बेकारी से मुक्त नए हिंदुस्तान के आदर्श के साथ मेल खाती होगी। (पूर्वोक्त, पृ.२६-२७)

६. गाँवों की सफाई

देश में जगह-जगह सुहावने और मनभावने छोटे-छोटे गाँवों के बदले हमें घर जैसे गाँव देखने को मिलते हैं। क़रीब-क़रीब सभी गाँवों में घुसते समय जो अनुभव होता है, उससे दिल को खुशी नहीं होती। गाँव के बाहर और आसपास इतनी गंदगी होती है और वहाँ इतनी बदबू आती है कि अकसर गाँव में जानेवाले को आँख मूँदकर और नाक दबाकर जाना पड़ता है। ... हमारा फ़र्ज़ हो जाता है कि हम अपने गाँवों को सब तरह से सफाई के नमूने बनायें।

(र.का., २००४, पृ.२

७. नयी या बुनियादी तालीम

इस तालीम की मंशा यह है कि गाँव के बच्चों को सुधार-संवारकर उन्हें गाँव के आदर्श बाशिंदा बनाया जाए।... यह तालीम बालक के मन और शरीर दोनों का विकास करती है; बालक को अपने वतन के साथ जोड़ रखती है; और उसे अपने और देश के भविष्य का गौरवपूर्ण चित्र दिखाती है; और उस चित्र में देखे हुए भविष्य के हिंदुस्तान का निर्माण करने में बालक या बालिका अपने स्कूल जाने के दिन से ही हाथ बँटाने लगें इसका इंतजाम करती है। (र.का., २००४, पृ.२८-२९)

८. बड़ों की तालीम

ग्रामवासियों को इस बात का भी तो ख्याल नहीं कि विदेशियों की जो हकूमत यहाँ कायम है, उसका एक कारण उनकी अपनी कमज़ोरियाँ और खामियाँ भी हैं; और दूसरे, वे यह भी नहीं जानते कि इस परदेशी हकूमत की बला को दूर करने की ताकत ख़ुद उनमें है। इसलिए बड़ी उमर के अपने देशवासियों की शिक्षा का सबसे पहला अर्थ मैं यह करता हूँ कि उन्हें जबानी तौर पर यानी सीधी बातचीत के जरिए सच्ची राजनीतिक तालीम दी जाय।... इस जबानी तालीम के साथ-साथ लिखने-पढ़ने की तालीम भी चलेगी। इसके लिए खास लियाकत की जरूरत है।

(र.का., २००४, पृ.३०-३१)

९. स्त्रियाँ

सेवा के धर्मकार्य में स्त्री ही पुरूष की सच्ची सहायक और साथिन है। जितना और जैसा अधिकार पुरुष को अपने भविष्य की रचना का है उतना और वैसा ही अधिकार स्त्री को भी अपना भविष्य तय करने का है।

स्त्री को अपना मित्र या साथी मानने के बदले पुरूष ने अपने को उसका स्वामी माना है।.... इसलिए कांग्रेसवालों का यह फ़र्ज है कि वे स्त्रियों को उनकी मौलिक स्थिति का पूरा बोध करावें और उन्हें इस तरह की तालीम दें, जिससे वे जीवन में पुरूष के साथ बराबरी के दरजे से हाथ बँटाने लायक बनें।

(र.का., २००४, पृ.३२-३३)

१०. आरोग्य के नियमों की शिक्षा

- शुद्ध विचार करो और तमाम गन्दे व निकम्मे विचारों को मन से निकाल दो।
- दिन-रात ताजी से ताजी हवा का सेवन करो।
- शरीर और मन के काम का तौल बनाये रखो, यानी दोनों को बेमेल न होने दो।
- खड़े रहो। तनकर बैठो। अपने हर काम में साफसुथरे रहो और इन सब आदतों को अपनी आंतरिक स्वस्थता का प्रतिबिम्ब बनने दो
- खाना इसलिए खाओ कि अपने जैसे अपने मानवबंधुओं की सेवा के लिए ही जिया जा सके। भोग भोगने के लिए जीने और खाने का विचार छोड़ दो। अतएव उतना ही खाओ जितने से आपका मन और आपका शरीर अच्छी हालत में रहे और ठीक से काम कर सके। आदमी जैसा खाना खाता है, वैसा ही बन जाता है।
- आप जो पानी पिए, जो खाना खाए और जिस हवा में साँस ले वे सब बिलकुल साफ होने चाहिए। आप सिर्फ अपनी निज की सफाई देख संतोष न मानें, बल्कि हवा, पानी, और खुराक की जितनी सफाई आप अपने लिए रखें, उतना ही त्रिविध सफाई का शौक आप अपने आसपास के वातावरण में भी फैलाएं।

(र.का., २००४, पृ.३६

११. प्रान्तीय भाषाएँ

अहिंसा की बुनियाद पर रचे गये स्वराज्य की चर्चा में यह बात शामिल है कि हमारा हर एक आदमी आज़ादी की हमारी लड़ाई में ख़ुद स्वतंत्र रूप से हाथ बंटाए। लेकिन अगर हमारी आम जनता लड़ाई के हर पहलू और उसकी हर सीढ़ी से परिचित न हो और उसके रहस्य को भलीभाँति न समझती हो, तो स्वराज्य की रचना में वह अपना हिस्सा किस तरह अदा करेगी? और जब तक सर्वसाधारण अपनी बोली में लड़ाई के हर पहलू व कदम को अच्छी तरह समझाया नहीं जाता, उनसे यह उम्मीद कैसे की जाए कि वे उसमें हाथ बंटाएंगे?

(र.का., २००४, पृ.३७-३८)

१२. राष्ट्रभाषा

समूचे हिंदुस्तान के साथ व्यवहार करने के लिए हमको भारतीय भाषाओं में से एक एसी भाषा की जरूरत है, जिसे आज ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में लोग जानते और समझते हों और बाकी के लोग जिसे झट सीख सकें। इसमें शक नहीं कि हिंदी ही एसी भाषा है।... यही भाषा जब उर्दू लिपि में लिखी जाती है तो उर्दू कहलाती है। राष्ट्रीय कांग्रेस ने सन १९२५ के अपने कानपुर अधिवेशन में जो मशहूर प्रस्ताव पास किया था, उसमें सारे हिंदुस्तान की इसी भाषा को हिन्दुस्तानी कहा है। ... इस राष्ट्रभाषा को हमें इस तरह सीखना चाहिए, जिससे हम सब इसकी दोनों शैलियों को समझ और बोल सकें और इसे दोनों लिपियों में लिख सकें।

जितने साल हम अंग्रेजी सीखने में बरबाद करते हैं उतने महीने भी अगर हम हिंदुस्तानी सीखने की तकलीफ न उठाएं, तो सचमुच कहना होगा कि जनसाधारण के प्रति अपने प्रेम की जो डींगें हम हाँका करते हैं, वे नरी डींगें ही हैं। (र.का., २००४, पृ.३८-३९)

१३. आर्थिक समानता

रचनात्मक कार्यक्रम का यह अंग अहिंसापूर्ण स्वराज्य की मुख्य चाबी है

(र.का., २००४, पृ.४०)

- अगर धनवान लोग अपने-अपने धन को और उसके कारण मिलनेवाली सत्ता को ख़ुद राजी-ख़ुशी से छोड़कर और सबके कल्याण के लिए सबके साथ मिलकर बरतने को तैयार न होंगे तो यह तय समझिए कि हमारे देश में हिंसक और खूँखार क्रान्ति हुए बिना न रहेगी।

राष्ट्रीय कांग्रेस में धनवान कांग्रेसी भी हैं। इस मामले में पहल करके उन्हें औरों को रास्ता दिखाना है।

(पूर्वोक्त, पृ.५२)

हर एक कांग्रेसी को अपने आपसे यह सवाल पूछना है कि इस आर्थिक समानता की स्थापना के लिए उसने क्या किया है?

(पूर्वोक्त, पृ.४२)

१४. किसान

जो किसानों या खेतिहरों को संगठित करने का मेरे तरीका जानना चाहते हैं, उन्हें चंपारन के सत्याग्रह की लड़ाई का अध्ययन करने से लाभ होगा। चंपारन का आंदोलन आम जनता का आंदोलन बन गया था और वह बिलकुल शुरू से लेकर आख़िर तक पूरी तरह अहिंसक रहा था। उसमें कुल मिलाकर कोई बीस लाख से भी ज़्यादा किसानों का संबंध था। सौ साल पुरानी एक खास तकलीफ को मिटाने के लिए यह लड़ाई छेड़ी गई थी। इसी शिकायत को दूर करने के लिए पहले कई खूनी बगावतें हो चुकी थीं। किसान बिलकुल दबा दिये गये थे। मगर अहिंसक उपाय वहाँ छह महीनों के अंदर पूरी तरह सफल हुआ। किसी तरह का सी

राजनीतिक आंदोलन या राजनीति के प्रत्यक्ष प्रचार की मेहनत किए बिना ही चंपारन के किसानों में राजनीतिक जागृति पैदा हो गई। उनकी शिकायत को दूर करने में अहिंसा ने जो काम किया उसका प्रत्यक्ष प्रमाण मिल जाने से वे सब राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर खिंच आए और सत्याग्रह की पिछली लड़ाइयों में उन्होंने अपनी ताकत का पूरा परिचय दिया।

इनके सिवा, खेड़ा, बारडोली और बोरसद में किसानों ने जो लड़ाइयाँ लड़ीं, उनके अध्ययन से भी पाठकों को लाभ होगा। किसान संगठन की सफलता का रहस्य इस बात में है किसानों की अपनी जो तकलीफें हैं, जिन्हें वे समझते और बुरी तरह महसूस करते हैं, उन्हें दूर कराने के सिवा दूसरे किसी भी राजनीतिक हेतु से उनके संगठन का दुरूपयोग न किया जाए। (र.का., २००४, पृ.४३, ४४)

१५. मजदूर

अहमदाबाद के मजदूर संघ का नमूना समूचे हिंदुस्तान के लिए अनुकरणीय है। वह शुद्ध अहिंसा की बुनियाद पर खड़ा किया गया है। अपने अब तक के कार्यकाल में उसे कभी पीछे हटने का मौका नहीं आया। बिना किसी तरह के शोरगुल, धांधली या दिखावा किए ही उसकी ताकत बराबर बढ़ती गई है। उसका अपना अस्पताल है, मिलमजदूरों के बच्चों के लिए उसके अपने मदरसे हैं, बड़ी उमर के मजदूरों को पढ़ाने के क्लास हैं, उसका अपना छापखाना और खादी-भंडार है और मजदूरों के रहने के लिए उसने घर भी बनवाए हैं। अहमदाबाद के क़रीब-क़रीब सभी मजदूरों के नाम मतदाताओं की सूची में दर्ज है, और चुनावों में वे पुरअसर तरीके से हाथ बँटाते हैं।.... यह मज़दूर-संघ कांग्रेस की दलबन्दीवाली राजनीति में कभी शरीक नहीं हुआ। शहर की म्यूनिसिपैलिटी की नीति पर संघवालों का असर पड़ता है। संघ अब तक अनेक हड़तालों को अच्छी सफलता

के साथ चला चुका है और ये सब हड़तालें पूरी तरह अहिंसक रह हैं। यहाँ के मज़दूरों और मालिकों ने अपने आपसी झगड़े मिटाने वे लिए ज़्यादातर अपनी राजीखुशी से पंच की नीति को स्वीकार किय है। मेरा बस चले तो मैं हिंदुस्तान की तमाम मजदूर संस्थाओं क संचालन अहमदाबाद के मजदूर संघ की नीति पर करूँ।

(र.का., २००४, पृ.४६-४७

१६. आदिवासी

'आदिवासी' शब्द का अक्षरश: अर्थ देश के असली निवासी होता है

आदिवासियों की सेवा भी रचनात्मक कार्यक्रम का एक अंग है।

इससे कौन इन्कार कर सकता है कि इस तरह की तमाम सेव महज (सिर्फ) भूतदया की भावना से प्रेरित सेवा नहीं बल्कि ठोस राष्ट्रसेवा है, और वह हमें पूर्ण स्वराज्य के ध्येय के ज़्यादा नज़दीक ले जाती है। (र.का., २००४, पृ.४७, ४८, ४९

१७. कोढ़ी

कोढियों के धाम के नाते मध्य आफ्रिका के बाद दूसरा नंबर हिंदुस्ता का आता है। हममें जो सबसे श्रेष्ठ या चढ़ेबढ़े हैं, उन्हीं की तरह कोढ़ी भी हमारे समाज के अंग हैं और जिन कोढ़ियों की सार-संभा की सबसे ज़्यादा जरूरत है, उन्हीं की हमारे यहाँ जान-बूझकर उपेक्ष की जाती है।

अगर हिंदुस्तान में सचमुच नवजीवन का संचार हुआ है, त हिंदुस्तान में एक भी कोढ़ी या एक भी भिखारी वैसा न होना चाहि जिसका नाम हमारे पास दर्ज न हो और जिसकी सार-संभाल हमने ली हो। (र.का., २००४, पृ.४९-५

१८. विद्यार्थी

मैं शोध या अनुसंधान का जो काम कर रहा हूँ, उसमें शामिल होने के लिए अपनी इस युनिवर्सिटी में भरती होने का स्थायी निमंत्रण मैं उन्हें देता हूँ। उसमें भरती होने के नियम इस प्रकार हैं:

(१) विद्यार्थीयों को दलबन्दीवाली राजनीति में कभी शामिल न होना चाहिए।

(२) उन्हें राजनीतिक हड़तालें न करनी चाहिए। विद्यार्थी वीरों की पूजा चाहे करें, उन्हें करनी चाहिए। उनके प्रति अपनी भक्ति प्रगट करने के लिए उन वीरों के उत्तम गुणों का अनुकरण करना चाहिए, हड़ताल नहीं। .... किसी भी हालत में और किसी भी विचार से उन्हें अपने से भिन्न मत रखनेवाले विद्याथियों या स्कूल कॉलेज के अधिकारियों के साथ जबरदस्ती न करनी चाहिए।

(३) सब विद्याथियों को सेवा की ख़ातिर शास्त्रीय तरीके से कातना चाहिए। कताई के अपने साधनों और दूसरे औजारों को उन्हें हमेशा साफसुथरे, सुव्यवस्थित और अच्छी हालत में रखना चाहिए। संभव हो तो वे अपने हथियारों, औजारों या साधनों को ख़ुद ही बनाना सीख लें। अलबत्त, उनका काता सूत सबसे बढ़िया होगा। कताई संबंधी सारे साहित्य का और उसमें छिपे आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और राजनीतिक सब रहस्यों का उन्हें अध्ययन करना चाहिए।

(४) अपने पहनने-ओढने के लिए वे हमेशा खादी का ही उपयोग करें, और गाँवों में बनी चीजों के बदले परदेश की या यंत्रों से बनी चीजों को कभी न बरतें।

(५) वंदे मातरम् गाने या राष्ट्रीय झंडा फहराने के मामले में दूसरों पर जबरदस्ती न करें।

(६) अपने दिल में सांप्रदायिकता या अस्पृश्यता को घुसने न दें। दूसरे धर्मोंवाले विद्यार्थीयों और हरिजनों को अपने भाई समझकर उनके

साथ सच्ची दोस्ती कायम करें।

(७) अपने दुःखी-दर्दी पड़ोसियों की सहायता के लिए वे तुरन्
दौड़ जाए। आसपास के गाँवों में सफाई का और भंगी का काम क
और गाँवों के बड़ी उमरवाले स्त्री-पुरूष-बच्चों को पढ़ाएँ।

(८) हिन्दुस्तानी का जो दोहरा स्वरूप तय हुआ है, उसके अनुस
उसकी दोनों शैलियों और दोनों लिपियों के साथ वे राष्ट्रभाषा हिंदुस्ता
सीख लें।

(९) विद्यार्थी जो भी कुछ नया सीखें, उस सबको अपनी मातृभा
में लिख लें और जब वे हर हफ्ते अपने आसपास के गाँवों में दौ
करने निकलें, तब उसे अपने साथ ले जाएँ और लोगों तक पहुँचाएँ

(१०) वे लुक-छिपकर कुछ न करें; जो करें खुल्लमखुल्ला क
अपने हर काम में उनका व्यवहार बिलकुल शुद्ध हो। वे अपने जीव
को संयमी और निर्मल बनाएँ। किसी चीज़ से न डरें और निर्भय रहक
अपने कमजोर साथियों की रक्षा करने में मुस्तैद रहें; और दंगों
अवसर पर अपनी जान की परवाह न करके अहिंसक रीति से उ
मिटाने को तैयार रहें।

(११) अपने साथ पढनेवाली विद्यार्थिनी बहनों के प्रति अप
व्यवहार बिलकुल शुद्ध और सभ्यतापूर्ण रखें।

विद्यार्थीयों के लिए मैंने जो कार्यक्रम सुझाया है, उस पर अम
करने के लिए उन्हें समय निकालना होगा। अपने अभ्यास के समय
से एक साल का समय इस काम के लिए अलग निकालें; मैं यह न
कहता तक एक ही बार में वे सारा साल दे दें। अपने समूचे अभ्यासक
में इस साल को बाँट लें और थोड़ा-थोड़ा करके पूरा करें। उन्हें
जानकर आश्चर्य होगा कि इस तरह बिताया हुआ साल व्यर्थ न
गया। इस समय में की गई मेहनत के जरिये वे देश की आज़ादी
लड़ाई में अपना ठोस हिस्सा अदा करेंगे और साथ ही अपनी मानसि
नैतिक और शारीरिक शक्तियाँ भी बहुत कुछ बढ़ा लेंगे।

सविनय कानून-भंग का स्थान

सविनय कानून-भंग के तीन अलग-अलग काम हैं:

(१) किसी स्थानीय अन्याय या शिकायत को दूर करने के लिए इसका सफल प्रयोग किया जा सकता है।

(२) किसी खास अन्याय, शिकायत या बुराई के ख़िलाफ़ उसे मिटाने के मसले पर कोई खास असर डालने का इरादा न रखते हुए, स्थानीय जनता को उस अन्याय या शिकायत या बुराई का भान कराने या उसके दिल पर असर डालने के लिए कुरबानी या आत्मबलिदान की भावना से भी सविनय कानून-भंग किया जा सकता है। चंपारन में यही हुआ था। वहाँ अपने काम का क्या असर होगा, इसका हिसाब लगाए बिना और यह अच्छी तरह जानते हुए भी, कि शायद लोग जरा भी दिलचस्पी नहीं लेंगे, मैंने कानून का सविनय भंग किया था। मेरे काम का नतीजा कुछ और ही हुआ, जो सोचा नहीं गया था। इसे अपनी रूचि के अनुसार आप ईश्वर की कृपा या तकदीर का खेल मान सकते हैं।

(३) रचनात्मक कार्य में जनता का पूरा सहयोग न मिलने पर उसके बदले में सन १९४१ में छिड़े सत्याग्रह की तरह सविनय कानून भंग की लड़ाई छेड़ी जा सकती है। अगरचे वह लड़ाई, हमारी आज़ादी की संपूर्ण लड़ाई के एक हिस्से के रूप में उसे बल पहुँचाने के ख्याल से, शुरू की गई थी, फिर भी उसे जान-बूझकर वाणी स्वातंत्र्य के एक खास मुद्दे तक ही मर्यादित रखी गयी थी। सविनय कानून-भंग की लड़ाई किसी एक व्यापक हेतु के लिए, मसलन पूर्ण स्वराज्य के लिए नहीं लड़ी जा सकती। लड़ाई की माँग स्पष्ट सामनेवाले को साफ-साफ समझ में आनेवाली, और उसके द्वारा पूरी की जा सकने लायक होनी चाहिए। अगर इस तरीके पर ठीक से अमल किया जा सके, तो वह हमें ठेठ अपने लक्ष्य तक जरूर ले जाए।

उपर दिए गए पहले दो उदाहरणों में बड़े पैमाने पर रचनात्मक

काम की जरूरत नहीं; न होनी चाहिए। लेकिन पूर्ण स्वराज्य की सिद्धि के लिए सविनय कानून-भंग की लड़ाई, रचनात्मक कार्यक्रम में करोड़ों देशवासियों के सहयोग के अभाव में, निरी बकवास बन जाती है; और वह निकम्मी ही नहीं, नुकसानदेह भी है।

(र.का., २००४, पृ.५६, ५७, ५८)

उपसंहार

अगर रचनात्मक कार्यक्रम के बिना मैं सविनय कानून भंग की लड़ाई लड़ने लगूँ, तो वह लकवे से बेकार बने हुए हाथ से चम्मच उठाने जैसी बात होगी।

(र.का., २००४, पृ.६०)

परिशिष्ट

पशु-सुधार

... गो-सेवा के विषय को भी रचनात्मक कार्यक्रम में शामिल करना चाहिए।

(र.का., २००४, पृ.६०

* * *

महात्मा गांधी की पुस्तकें

१.	अनासक्तियोग	४०-०
२.	आरोग्य की कुंजी	१५-०
३.	कुदरती उपचार	२०-०
४.	गांधीजी की अपेक्षा	४०-०
५.	गांधीजी की आत्मकथा	८०-०
६.	गांधीजी की संक्षिप्त आत्मकथा	४०-०
७.	गांधीजी का जीवन उन्हीं के शब्दों में	२०-०
८.	ग्रामस्वराज	८०-०
९.	दक्षिण आफ्रिका के सत्याग्रहका इतिहास	३५-०
१०.	मंगल प्रभात	१५-०
११.	मेरे सपनों का भारत	७०-०
१२.	मोहनमाला	३०-०
१३.	रचनात्मक कार्यक्रम	१०-०
१४.	रामनाम	१५-०
१५.	राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी	६०-०
१६.	सत्य ही ईश्वर है	४०-०
१७.	स्वेच्छा से स्वीकार की हुई गरीबी	२०-०
१८.	हिंद स्वराज	३०-०
१९.	हम सब एक पिता के बालक	३०-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–३८० ०१४

ISBN 978-81-7229-343-7

9 788172 293437

₹ 15